एक संवेदना और सोच : गिरिजाकुमार माथुर

Name: Renu Kukreti

Designation: Assistant Professor

College: T. John College, Gottigere, Bangalore

Topic: Ek Samvedna Aur Soch

प्रस्तावना

साहित्य के माध्यम से साहित्यकार अपने मन की समझ को शब्दों का रूप देकर समाज में अपनी रचनाओं या कृतियों को सम्प्रेषित करता है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है क्योंकि इसमें व्यक्ति , समाज , परिस्थितियों ,मनोभावों आदि को भावपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक कालखण्ड के विषय ,विचार ,सोच और दृष्टिकोण एक -दूसरे से अलग थे , लेकिन आत्मचिंतन समान ही रहा। उसी धारा में आधुनिक युग के कवियों ने भी अपनी विचारधारा को पंख दिए। उसी श्रंखला में महान कवि , विचारक , नाटककार गिरिजाकुमार माथुर का नाम सम्मान से लिया जाता है। प्रत्येक साहित्यकार अपने काल को जीता है उसकी भावनाओं का रूप विभिन्न विषयों के माध्यम से विभिन्न विधाओं द्वारा समाज की तस्वीर को दिखाता है। गिरिजाकुमार माथुर बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे , एक कर्मयोगी जिसने जीवन की कठिनाइयो , प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हिंदी साहित्य को आशावादी स्वर प्रदान किया। उनकी कविताओं में संवेदना और बिम्ब के साथ कलात्मकता भी दिखाई दी। गिरिजाकुमार माथुर ने नयी कविता को अनेक बंधनो से मुक्त किया उनका साहित्य आम आदमी के मन के निकट था। आधुनिक समाज की बदलती जीवन शैली ने आम जनता में उदासीनता और अविश्वास की भावना को जन्म दिया। गिरिजाकुमार माथुर ने अपनी रचनाओं में आशावादी सोच के साथ सकारात्मक दृष्टिकोण भी समाज तक पहुँचाया। जीवन की विसंगतियों का प्रभावी रूप उनके साहित्य में नजर आता है।

जब भी मैं किताबों के पन्ने पलटता हूँ।
कई किरदार से रूबरू हो जाता हूँ।
कुछ में अपनों को, कुछ में दूसरों को पाता हूँ।
एक किताब के जरिए न जाने कितना
जिंदगियो को जी जाता हूँ।

गिरिजाकुमार माथुर का जीवन -प्रवाह

कविता मानव व्यक्तित्व का निर्माण करती है।कवि की बहुमुखी प्रतिभा भी उसी में पूर्णता पाती है ,काव्यधारा के विशिष्ठ कवि गिरि जाकुमार माथुर ने छायावादी संस्कारो से प्रेम और सौंदर्य की बारीकियों को आत्मसात करके अपनी काव्ययात्रा की शुरुआत की।माथुर जी का जन्म ***22*** अगस्त ***1919*** में मध्यप्रदेश के गुना जिले में हुआ प्रारम्भिक शिक्षा झाँसी उत्तरप्रदेश में हुई, लखनऊ विश्वविद्लाय से एम. ए अंग्रेजी और एल. एल. बी.की शिक्षा प्राप्त की। वकालत करने के कुछ समय बाद इन्होंने दिल्ली के आकाशवाणी में काम किया, दूरदर्शन में नौकरी लगने के बाद इन्होने अपने कर्मक्षेत्र और साहित्य सृजन का तालमेल बनाकर रखा, कार्यकाल समाप्त करने पर दिल्ली दूरदर्शन से ही सेवा निवृत हुए।प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के आधुनिक भावबोध ,रागात्मक ,ऐतिहासिक मूल्यों व बोध के बीच उनकी कविता में यथार्थवाद का स्तर भी कुछ उभरकर सामने आया इसलिए उनकी कविताओं में मानवीयता का स्वर सुनाई देता है।' भटका हुआ कारवां ' कविता

द्वारा समाज की बदलती तस्वीर और पुरानी और नई विचारधारा की कश्मकश , भटकाव और खीझ उनकी संवेदनाओ में दिखाई देती है।

उन पर क्या विश्वास जिन्हें है, अपने पर विश्वास नहीं
वे क्या दिशा दिखाएँगे ,दिखता जिनको आकाश नहीं
बहुत बड़े सतरंगे नक्शे पर , बहुत बड़ी शतरंज बिछी
धब्बों वाली चादर जिसकी ,कटी- टेढ़ी तिरछी
जुटे हुए है वही खिलाड़ी , चाल वही संकल्प वही
सबके वही पियादे फर्जी कोई नया विकल्प नहीं
चढ़ा खेल का नशा इन्हें , दुनिया का होश-हवाश नहीं
दर्द बँटाएँगे क्या , जिनको अपने से अवकाश नहीं

जीवन में सुखों के पीछे दुःख भी छिपे रहते है, इस सत्य को समझकर यथार्थ का सामना करना चाहिए। दुविधा में पडकर मनुष्य का साहस कम ही होता है। यथार्थ में जीना ही मनुष्य का सच्चा जीवन है, यहाँ छाया शब्द को सुंदर स्मृतियों के रूप में चित्रित किया गया है। गिरिजा कुमार माथुर की समग्र काव्य -यात्रा से साक्षात्कार उनकी पुस्तक ' मुझे और अभी कहना है ' मिलता है। उनकी अन्य महत्त्वपूर्ण रचनाएँ है। धूप के धान , शिलापंख चमकीले ,नाश और निर्माण, भीतरी नदी की यात्रा ,मंजीर , जो बंध नहीं सका ,कल्पांतर आदि। वह कवि ,नाटककार ,समालोचक की रूप में जाने गए सचिच्दानंद हीरानंद वात्स्यायन ' अज्ञेय ' द्वारा सम्पादित तार सप्तक के मुख्य कवि गिरिजा कुमार माथुर सभी शैली और रंग की कविताओं के साथ साहित्य की मुख्यधारा में आज भी उपस्थित है। प्रगति,प्रयोग ,छंद ताल, छन्द मुक्तता उनकी रचनाओं की पहचान है। वह विद्रोही काव्य-परम्परा के रचनाकार माखनलाल चतुर्वेदी ,बाल कृष्ण शर्मा नवीन आदि की रचनाओं से प्रभावित रहे ,उनके शब्दों में नये बिम्ब ने चमत्कार पाया। आजीवन अपने शब्दों में थके -हारे लोगों की जिंदगी को अनुभव किया। कविता का संस्कार उनमें बचपन से ही था ,महाप्राण निराला को उनके शब्दों का विद्रोही तेवर ज्यादा पसंद आता था माथुर जी आजीवन अपने शब्दों में थके-हारे लोगों की ज़िदगी के करीब रहे।

कौन थकान हरे जीवन की ?
बीत गया संगीत प्यार का रूठ गई कविता भी मन की वंशी में अब नींद भरी है
स्वर पर पीत सांझ उत्तरी है
बुझती जाती गूंज आख़िरी इस उदास वन पथ के ऊपर
पतझर की छाया गहरी है
अब सपनों में शेष रह गई
सुधियाँ उस चंदन के वन की
रात हुई पंछी घर आए
पथ के सारे स्वर सकुचाए
म्लान दिया बत्ती की बेला थके प्रवासी की आँखो में
आंसू आ आकर कुम्हलाए कहीं बहुत ही दूर उनींदी
झाँझ बज रही है पूजन की कौन थकान हरे जीवन की

साहित्य और संवेदना

गिरिजा कुमार माथुर की कविताओं में मार्क्सवाद का प्रभाव भी दिखाई देता है। साम्यवाद ,पूंजीपति वर्ग का शोषण , सामंत वाद , गरीब व्यक्ति की मन की पीड़ा , दुर्दशा को समझा और उनके अधिकारों और हक के लिए आवाज उठाई उनकी रचनाओं में वह स्वर सुनाई देता है ।नव निर्माण में कहीं न कही
पीड़ा का दर्द भी सुनाई देता है।

पुराना मकान फिर पुराना ही होता है
उखड़ा हो पलस्तर खार लगी चनखारियाँ
टूटी महरावें घुन लगे दरवाजे
सील भरे फर्श झरोखे ,अलमारियाँ कितनी भी मरम्मत करो
चेपे लगाओ रंग रोगन करवाओ चमक नहीं आती है
रूप न सँवरता है नींव वही रहती है कुछ भी बदलता है

इस कविता में माथुर जी ने राजनैतिक और सामाजिक व्यवस्था पर करारी चोट की है । वही दूसरी ओर उनकी रचना छाया मत छूना मन भावनात्मक और संवेदनात्मक धरातल पर लिखी गई ,उत्कृष्ट रचना है । यह कविता व्यक्ति के मर्म को छूती है ।

छाया मत छूना मन , होगा दुख दूना
जीवन में है सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र गंध फैली मनभावनी
तन सुगंध शेष रही बीत गई यामिनी कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी
भूली-सी एक छूअन , बनता हर जीवित क्षण
छाया मत छूना मन , होगा दुख दूना

आज की भागती-दौड़ती जिंदगी में हमें अपने-आप को जानने के लिए समय नहीं मिल पाता । आधुनिकता की दौड़ में अपने जीवन-मूल्यों के साथ की टकराहट माथुर जी की कविताओं, लेख, निबंधों में दिखाई देता है । मनुष्य के मन का तनाव , घुटन , अपेक्षा-उपेक्षा, विडंबना , त्रासदी उनकी रचनाओं में प्रभावी रूप से नजर आता है ।

बरसों के बाद कभी
हम तुम यदि मिले कहीं
देखे कुछ परिचित से लेकिन पहचाने ना

उदारवादी दृष्टिकोण

प्रगतिवादी काव्य का मूलाधार मार्क्सवादी दर्शन है, उसका मूल उददेश्य जनता के लिए जनता का चित्रण करना है। **बहुजन हिताय बहुजन सुखाय है**। **लोका समस्ता सुखिनो भवंतु** का भाव माथुर जी की कविताओं की पहचान

है, साहित्य का रूप तभी उदात्त धरातल पाता है ,जब जब वह समाज , व्यक्ति और प्रगतिवादी सोच से जुड़ती है। माथुर जी की उदात्त सोच उनकी उक्त पंक्तियों में मिलती है

हम सब बौने है ,मन से ,बुद्धि से ,मस्तिष्क से ,भावना से
चेतना से भी , विवेक से भी
क्योंकि हम जन है साधारण है
हम नहीं विशिष्ट

अपनी राष्ट्र भाषा के प्रति सम्मान होना देश के नागरिक का प्रथम कर्तव्य है। हिंदी साहित्य के कवियों ने यह कार्य श्रद्धा के साथ किया, गिरिजा कुमार माथुर जी संयुक्त राष्ट्र संघ के अंतर्गत न्यूयार्क में हिंदी पदाधिकारी के रूप में अमेरिका गए थे। वहाँ भी उन्होंने हिंदी भाषा को सम्मान और पहचान दिलाई ,उन्होंने हिंदी भाषा को अपनी कविता ' हिंदी जन बोली है ' में व्यक्त किया है।

एक डोर में सबको जो है बाँधती
वह हिंदी है
हर भाषा को सगी बहन जो मानती
वह हिंदी है
भरी-पूरी हो सभी बोलियाँ यही कामना हिंदी है
गहरी हो पहचान आपसी यही साधना हिंदी

प्रेम और सौंदर्य के कवि गिरिजाकुमार माथुर की संवेदना का रूप रूमानी है ।उनकी कविताओं में युगबोध स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, तो दूसरी ओर सामाजिकता की भावना और आस्था का स्वर भी सुनाई देता है। आस्था अनुराग के कवि माथुर जी के काव्य में संत्रास ,युगबोध ,ऊब , विसंगति , क्षोभ आदि मनोभाव सहज ही अनुभव हो जाता है , आशा और उम्मीद की किरण और विश्वास की चेतना के आस-पास उनकी भावनाओं में प्रश्नचिन्ह भी दिखाई देते है।

गरम भस्म माथे पर लिपटी
कैसे उसको चंदन लूँ
प्याला जो भर गया जहर से
सुधा कहाँ से उसमे भर लूँ
कैसे उसको महल बना दूँ
धूल बन चुका खंडहर
चिता बने जीवन को आज
सुहाग- चांदनी कैसे कर दूँ
कैसे हँस कर आशाओं के मरघट पर
बिखराऊं रोली
होली के छंदों में कैसे दीपावली बन्द बनाऊँ
मैं कैसे आनंद मनाऊँ

आधुनिक हिंदी साहित्य को नया आयाम और दिशा प्रदान करने में गिरिजाकुमार माथुर का योगदान सराहनीय है। उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है, जो आज की परिस्थितियों ,संवेदनाओ और सामाजिक बदलाव को उनकी कविताओं और उनकी रचनाओं द्वारा हमें आने वाले समय की तस्वीर दी है।

उनकी संवेदना आज के युग को मुखरित करती है, ऐसा लगता है कि जैसे कवि इतने काल-पूर्व भी द्दष्टा की भाँति आज के युग को आत्मसात किया , उनकी भाषा - शैली और शब्दों का मर्म आज के समाज को प्रतिबिंबित करता है।

References:

1) मुझे कुछ कहना है ***:*** गिरिजाकुमार माथुर

2) हमारे लोकप्रिय गीतकार ***:***शेरजंग गर्ग